रविवार, दिनाँक 18-06-2023 को

सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय

सजनों क्या सबको मानवता के उत्थान हेतु जो यह **Humanity Fest** रखा गया, इसमें मजा आ रहा है जी?

''हाँ जी''।

तो जो बच्चे नहीं आये उनका क्या होगा? जानो ऐसा करके उन बच्चों व उनके अभिभावकों ने अपना बहुत बड़ा नुक्सान कर लिया क्योंकि इस क्रिया द्वारा जो उनके गृहस्थाश्रमों का सुधार हो सकता था, वह अब सम्भव नहीं। अब यदि वे नकरात्मक स्वभावों में ही चलना चाहते हैं और सारी उम्र परेशान रहना चाहते हैं तो ये उनकी अपनी मर्जी है। इसके विपरीत जिनके बच्चे इस फेस्ट में आये हैं वे किस्मत वाले बन जाएँगे। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि आपने इस फेस्ट के दौरान जो भी सुना या अभी सुनोगे, उसको घर में जाकर अपने जीवन-व्यवहार में लाना ताकि आपके माता-पिता और परिवारजनों को समझ में आये कि यहाँ आने के पश्चात आपके दिलों में यानि मनों में हक़ीकत में कलियुगी भाव-स्वभाव छोड़ सतयुगी संस्कृति अपनाने के प्रति चाहना पैदा हुई है। चलो अब आगे भजन सुनोः-

जल्दी मिला दे बलधार, ओ दिल मंगे नाथ कीते।।

महाबीर जी दे चरणां नू धो धो पीवां, सांवला मिलादे बलधार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

राम लक्ष्मण नू तिलक लगावां, लक्ष्मण शेष दा अवतार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

रघुनाथ जी दे चरणां विच महारानी सोहवे, मांग भरेंदी संवार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

रघुनाथ जी दे गल विच फुलां दी माला, नाल सोहवन बलधार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

ऋषि मुनि अन्त पा न सकन, रस्ता बताया बलधार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

रल मिल भैणों महाबीर जी दी शरणी आओ, महाबीर जी दा रघुनाथ जी दे नाल प्यार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

सोहणे मन्दिरां विच सांवले साजन, भज लौ राम बलधार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

मैं दासी तुहाडे चरणां विच राहवां, महाबीर जी रघुनाथ मिलावन हार।

ओ दिल मंगे नाथ कीते, जल्दी मिलादे बलधार।।

सजनों अभी तक हम फेस्ट के दौरान जान चुके हैं कि अगर हमारा ख़्याल जगत की ओर होता है तो हमारी मनःस्थिति अन्धकारमय होती है और अगर हमारा ख़्याल/सुरत आत्म-स्वरूप की ओर प्रशस्त होता है तो हमारा मन-मन्दिर प्रकाशित रहता है। मन प्रकाशित है तो हमारा ख़्याल-ध्यान आत्म-प्रकाश में स्थित रह अपने परमात्म स्वरूप को जान जाता है। फिर हम उसी तरह से सर्व-शक्तिमान होकर

इस स्थूल सर्गुण रूपी जगत को सहज ही निपुणता से खेल सकते हैं। फिर इस खेल में चाहे कलियुगी टीम हो या द्वापर की या फिर त्रेता की, हमें कोई भी नहीं हरा सकता। इस तरह हम तीनों युगों को परास्त कर सतयुग में प्रवेश कर जाते हैं यानि तीनों युगों पर विजय प्राप्त कर हमें ईनाम रूप में मिलता है - सतयुग में प्रवेश। सो यह आत्म-विजयी होने जैसी अर्थात ''ईश्वर है अपना आप'' के विचार पर स्थिरता से बने रहने की बात होती है। याद रखो जो ''ईश्वर है अपना आप'' के विचार पर बने रहने के प्रति दृढ़-संकल्प हो जाता है, उस जीव को परमात्मा की सर्व-व्यापकता का दर्शन हो जाता है। उस दर्शन के उपरान्त हम मान लेते हैं कि कीड़ी से लेकर हाथी तक व ब्रह्मा से लेकर तृण तक एक मैं ही हूँ और दूसरा कोई नहीं है। यह होता है - सुरत का अटल सुहागिन हो एकरूपता में आ जाना। आशय यह है कि सुरत/शब्द का मेल हो जाने पर सुरत अटल सुहागिन हो जाती है और दोनों का अलग-अलग वज़ूद समाप्त हो जाता है व दोनों एकरूप होकर कह उठते हैं - 'मैं ब्रह्म हूँ''। इस तरह ब्रह्म नाल ब्रह्म होने पर उस सुरत का भाव-स्वभाव व नज़रिया ब्रह्ममय हो जाता है और हृदय में सजनभाव स्थित हो जाता है। अब यह तो सब जानते ही हैं कि सजनभाव, ''समभाव-समदृष्टि'' की युक्ति का सबक़ है। इस तरह जब वह सुरत ''हम भी सजन, तुम भी सजन'' इस वृत्ति में ढल जाती है तो समभाव

समदृष्टि हो जाती है और सुरत आत्मज्ञानी बन जाती है। ऐसा होने पर सम का कोई सवाल नहीं रहता और दिव्य-दृष्टि का सबक़ मिल जाता है। फिर कुदरत का कोई भी रहस्य उस समदृष्ट दिव्य-दृष्टि मानव से छुपा नहीं रह पाता यानि वह सबके दिलों की जानने वाला सुजानदर्शी हो जाता है।

अन्य शब्दों में कहें तो उसे परमात्मा की सर्वज्ञता का भान हो जाता है और उसे यह भी ज्ञात हो जाता है कि वह परमात्मा कैसे सर्वज्ञ है व सबके दिलों की जानने वाला है यानि चाहे लुक के करो चाहे छुप कर सब उसके प्रत्यक्ष है। फिर हर कर्म करते हुए सावधान रहना होता है कि हम जो भी कर्म करे वह सुकर्म ही

हो और निष्काम भाव से किया जाए। याद रखो ऐसे कर्म से सबका हित होता है। इसके विपरीत कुकर्म या अधर्म कर्मगति का हेतु बनता है और उसके परिणाम स्वरूप आवागमन की त्रास भुगतनी पड़ती है।

विडम्बना की बात तो यह है कि इस त्रास को भुगतते हुए भी ऐसे इन्सान आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं और द्वि-भाव नहीं छोड़ते। इसी कारण परस्पर सम्बन्ध-विच्छेद तक हो जाते हैं और जगत के धोखे में फँसकर उनकी बुद्धि उन्हें धोखा दे जाती है। सजनों यह अपने प्रति व अपनों के प्रति बहुत बड़ा गुनाह होता है। इस गुनाह को करने से बचो और होश में आ जाओ। इस अवस्था से उबरने हेतु तहे दिल से कुदरत की शास्त्र-विहित आज्ञाओं का पालन करो। याद रखो ऐसा करने पर ही सतयुग में प्रवेश पा सकोगे। फिर जब हृदय में सतवस्तु प्रगट हो गई तो दृष्टिगत हो जाएगी और हम उसे ख़्याल द्वारा धारणकर उसका वर्त-वर्ताव करने के योग्य बन जाएँगे। जानो यही सर्वोत्तम योग्यता है। इस योग्यता को प्राप्त करने वाला सर्वोच्च सिंघासन यानि आत्मपद पर शोभित होने के काबिल बन जाता है। सो इस आत्मपद को पाने के प्रति अपनी रुचि प्रबल करो और सतयुग में प्रवेश करो। अब इसी विषय में ध्यान से सुनो-

आओ समभाव-समदृष्टि की युक्ति प्रवान कर
सजन युग की बुनियाद पक्की करने का दृढ़ संकल्प लें

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार यह सत्य तो सर्वविदित है कि आज के कलुषित वातावरण के दुष्प्रभाववश, सृष्टि का हर मानव तीनों तापों यथा आध्यात्मिक, आदिभौतिक व आधिदैविक से संतप्त होकर बौद्धिक स्तर पर मनमत के अधीन हो चुका है। जानो मानव जाति की इस भयावह अवस्था का मुख्य

कारण त्रेता, द्वापर व कलियुग का मनगढ़ंत ज्ञान है। इसी मनगढ़ंत ज्ञान के दुष्प्रभाववश आज मानव आधा-अधूरा भौतिक व दैवी ज्ञान प्राप्त कर, स्वार्थपरता अनुरूप जीवन जीने के लिए विवश हो गया है व उसमें किसी विध् भी सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने व परिपूर्ण विशुद्ध ज्ञानमय अवस्था में आने के प्रति रुचि ही जाग्रत नहीं हो पा रही।

इस संदर्भ में सभी उपस्थित सजनों से प्रार्थना है कि अपना आत्मनिरीक्षण करो और अगर आप के मन-मस्तिष्क की भी यही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है तो पुनः अपना सौभाग्य जगाने हेतु शीघ्रतातिशीघ्र इन तीनों तापों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए, अपने मन में, जो आपकी जीवन शक्ति के रूप में आत्मा विच परमात्मा भासित है, उसका जीवन के इस मोड़ पर ही स्वयं साक्षात्कार कर, अविलम्ब अपने ख़्याल का नाता उससे ध्यानपूर्वक जोड़, अपनी यथार्थ शक्ति को जान व पहचान लो। जानो ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाने पर, आपके जीवन में ऐसा क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा जिसके फलस्वरूप आपका अंतःकरण यानि मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार स्वतः ही निर्मल अवस्था को प्राप्त हो जाएंगे और आपके हृदय में सृष्टि का सत्य इस तरह प्रगट हो जाएगा कि आप इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ईश्वर रचित भिन्न-भिन्न प्रकार के खेलों की रमज़ जान जाओगे। ऐसी निपुणता प्राप्त होने पर आपकी सुरत सर्गुण-निर्गुण रूपी ईश्वरीय खेलों को निर्विकारिता से खेलते हुए भी, निर्वाण पद पर समरसता से आसीन रहेगी। सजनों यह है जीव का तीनों तापों से मुक्त हो व मृतलोक पर फ़तह पा जगत से आज़ाद होना यानि जीव का परमधाम पहुँच विश्राम को पाना।

उपरोक्त को दृष्टिगत रखते हुए अगर आप सबके मन में भी पुनः आत्मस्मृति में आकर ए विध् निष्पाप जीवन जीने की उत्कंठा पैदा हुई है तो अपने सहित कुल मानव समाज को, कुदरत प्रदत्त वास्तविक धर्म यानि निष्कामता के भाव से

परोपकार प्रवृत्ति में ढाल, समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार, जीवन जीने के योग्य बनाने का, दृढ़ संकल्प लो। याद रखो यदि ऐसा नहीं किया तो मानव अपने शरीर की इच्छापूर्ति यानि इन्द्रिय सुख में उलझ, वास्तविक आनन्दप्रदायक सुख-शांति से वंचित रह जाएगा और जो चोला उसे अपने जीवन का मूल लक्ष्य प्राप्त करने हेतु इतनी मुश्किल से प्राप्त हुआ है, उसे वृथा गँवा बैठेगा। यदि आप चाहते हो कि ऐसा न हो तो फिर आओ आज हर मानव के हृदय में स्वाभाविक क्रांति लाने और पुनः आत्मीयता के भाव स्वभावों में ढलने हेतु, समरूप आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने की उमंग जगाएं। इस संदर्भ में वैश्विक स्तर पर समभाव समदृष्टि की युक्ति का प्रसार करने हेतु, ऐसे स्कूल खोलने में अपना योगदान देने के लिए तत्पर हो जाएं। जानो इसी सामूहिक प्रयास द्वारा ही हम परस्पर शारीरिक सम्बन्धों से उबर, आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित करने में कामयाब हो सकेंगे और सर्वशक्तिमान ईश्वर की सर्वव्यापकता का भान रखते हुए, एकरूप हो, इस धरा पर पुनः सतयुग की स्थापना करने में समर्थ हो पाएंगे। सजनों यह होगा विश्व स्तर पर हर मानव का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर यानि सत्-वादी बन एकता, एक अवस्था में आना। जानो ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाने पर ही हम सर्वांगीण स्वस्थता के प्रतीक बन सकते हैं।

हम मानते हैं कि यह सब सुनने व समझने के पश्चात् आप सबके मन में भी सतयुगी इंसान बनने की उत्कंठा पैदा हुई होगी। अगर ऐसा ही है तो आओ अब आपको समयबद्ध इस लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रति उत्साहित करने हेतु, सतयुग व सतयुगी मानव की विशेषताओं से परिचित कराते हैं।

जानो सजनों सतयुग में सत्य व पुण्य के चार पाद होते हैं। इसीलिए यह युग सबसे उत्तम माना जाता है व उस युग में सभी मानव सच्चरित्र व धर्मात्मा होते हैं। इस स्वर्ण युग में जहाँ हर मानव की औसत आयु एक लाख वर्ष या इससे भी

अधिक होती है, वहीं इनके जीवनयापन की प्रणाली का आधार परमार्थ यानि आत्मिक ज्ञान होता है। एक छत्र ईश्वरीय शासन होने के कारण ईश्वरीय हुकम की सुदृढ़ता से पालना आवश्यक मानी जाती है और परस्पर सजन भाव का वर्त-वर्ताव चलता है। समभाव समदृष्टि की युक्ति अनुसार अंतःकरण स्वच्छ एव पारदर्शी होने के कारण, सबकी वृत्ति-स्मृति व दृष्टि क्रमशः निर्मल, दिव्य व स्वतन्त्र होती है। इसीलिए उन उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल आत्मज्ञानियों के स्वभाव सर्वोत्कृष्टता के प्रतीक होते हैं व मानवता के स्वाभिमान के परिचायक होते हैं।

जानो तभी तो उनका मन सदा संकल्प रहित अवस्था में सधा रहता है जिसके सद्प्रभाव से वे आजीवन सत्य धर्म की नेक राह पर चलते हुए व अनुशासित ढंग से परोपकार कमाते हुए सदा निर्विकार अवस्था में सधे रहते हैं।

हम कह सकते हैं कि वे आध्यात्मिक ज्ञानी, कुदरती कला को समझने वाले होते हैं। इसलिए संतोष, धैर्य उनके स्वभावों का सिंगार होता है और उनकी अभिव्यक्ति व प्रदर्शन, परम विशुद्ध और उत्कृष्ट आदर्शों के अनुकूल होता है। आशय यह है कि वे प्रसन्न चित्त, सुसंस्कृत इंसान, मानव रूप में, अपना जगत में आने का प्रयोजन, भली विध् समझते हैं और इसीलिए जीवन में जो कुछ भी करते हैं वे समर्पित भाव से ईश्वरीय शासन के नीति नियमों अनुसार ही करते हैं।

सजनों अब जब हमें सतयुगी इंसानों की सर्वोत्कृष्टता के प्रतीक गुण धर्म की समझ आ गई है तो हमारे लिए आवश्यक हो जाता है कि हम भी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित इलाही स्वाभाविक सिंगार पहन, दिव्यता के प्रतीक बने। उसके लिए हमें सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों का नित्य प्रति अध्ययन कर उनका चिंतन, मनन व विवेचन करना सुनिश्चित करना होगा। जानो कि यही एकमात्र मंत्र है शारीरिक काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकारयुक्त स्वभावों से ऊपर उठ व आत्मिक भाव-स्वभाव में ढल, पुनः कुदरत प्रदत्त सर्वोत्कृष्टता के प्रतीक बनने का। इसलिए इस सिद्धि को प्राप्त करने हेतु पुरुषार्थ

दिखाना, पुरुषार्थ दिखाना और ए विध् पुरुषार्थ दिखा कर इस संसार में पुनः धर्म का झण्डा बुलंद करने में सहयोग देते हुए सजन पुरुष बन जाना।

जानो सजनों ऐसा करना अब इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि समयानुसार स्वर्णिम प्रभात अब उदय होने वाला है, अतः जाग्रति में आ अब तो आँखें खोलो जीः-

जाग्रति

स्वर्णिम प्रभात आ है रहा,

अब तो आँखें खोलो जी।

दिव्य प्रकाश है सर्व छा रहा,

अब तो आँखें खोलो जी।।

कुदरत का हर रहस्य अब तो,

है दृष्टिगोचर होने वाला।

अज्ञान ने जो अंधकार दिया है,

उसका है मोचन होने वाला।।

अब तो आँखें खोलो जी।

व्याप्त दिव्यता हृदय शुद्ध रखेगी,

और वृत्तियाँ होंगी निर्विकारी।

हर कलपुर्ज़ा हमारा स्वस्थ होगा,

ख़तम होगी कलियुग की बीमारी।।

अब तो आँखें खोलो जी।।

संतोष-धैर्य बलिष्ठ होने के कारण,

सच्चाई-धर्म प्रतिष्ठित होगा।

तभी तो हर मानव सजन-भाव अपनाकर,

समभाव-समदृष्टि का अनुशीलन करेगा।।

अब तो आँखे खोलो जी।।

सम्पूर्ण ज्ञान सभी को मिलेगा,

हर ह्रदय में एक ही धर्म पलेगा।

मान-अपमान नहीं किसी को खलेगा,

अब ऐसा सतवस्तु का राज चलेगा।।

अब तो आँखे खोलो जी।।

इसलिए सभी से प्रार्थना है कि सर्वहित की ख़ातिर जाग्रति में आओ और कलियुग का पहरेवा बदल कर सतवस्तु का पहरेवा पाओ और उसी से ही प्रेम बढ़ाओ। यही मानव जाति के पुनःउत्थान लिए आवश्यक है। पुरुषार्थ दिखाओ, पुरुषार्थ दिखाओ और पुरुषार्थ दिखा कर अपने जन्म की बाज़ी जीत जाओ।

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

सजनों अब बली यानि बहादुर बन जाओ। इस सन्दर्भ में अब जो बुलेगा वह सबने मिलकर समझते हुए बोलना है और अपने आपको उस प्रयोजन की सिद्धि हेतु उत्साहित कर लेना है। यह अपने आप में हम सजनों के मन में सतयुग की संस्कृति जन-जन तक पहुँचाने के प्रति रुचि पैदा करने की बात है। अतः यह गाते जाओ, सुनते जाओ, नाचते जाओ, तालियाँ बजाते जाओ और सबके अन्दर सतयुगी संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाने की रुचि जाग्रत करते जाओ। इस प्रयोजन में सफलता प्राप्ति का दृढ़-संकल्प लो और दृढ़ता से आगे बढ़ जाओ। इस सन्दर्भ में कौन फ़र्स्ट आएगा?

''सभी ने हाथ खड़े किये''।

अगर सजनों सभी फ़र्स्ट आ गए तो हम इतनी जोर से ताली बजाएँगे कि तीनों लोक हर्षा उठेंगे और सहसा ही कह उठेंगे कि इन मृतलोक वालों को क्या हो गया है यानि यह सब कैसे मानवता के प्रतीक व सतयुग की पहचान बन गए हैं? इस तरह यह कमाल देखकर सब ही दँग रह जाएँगे। सो सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि इस तरह पुरुषार्थ दिखाकर सबको दँग कर दो। क्या यह मन्जूर है?

''हाँ जी''।

तो फिर मिलकर बोलोः-

नए साल का नया लक्ष्य है, आगे बढ़ने और बढ़ाने का

सतवस्तु की संस्कृति को,

जन जन तक पहुँचाने का

जन जन तक पहुँचाने का, हाँ....जन जन तक पहुँचाने का

त्रेता गया, गया द्वापर

कलियुग जाने वाला है

उस युग की अब बात करो,

जो युग आने वाला है

जो युग आने वाला है, हाँ....जो युग आने वाला है

सतयुग में क्या होता है, यह सत्य सबको बताओ जी

ए विध् सबको होश में लाकर

सतयुगी संस्कृति जनाओ जी

सतयुगी संस्कृति जनाओ जी, हाँ....सतयुगी संस्कृति जनाओ जी

समभाव अपनाकर

समदृष्टि में आकर

आओ बढ़े सतयुग की ओर

आओ बढ़े सतयुग की ओर, हाँ....आओ बढ़े सतयुग की ओर

अगर कुदरत का यह आवाहन सजनों समझ में आ रहा है तो इसके प्रति सबको जाग्रति में लाने हेतु आओ अब मिलकर बोलें...

आओ बढ़े सतयुग की ओर...

आओ बढ़े सतयुग की ओर...

आओ बढ़े सतयुग की ओर...

जानना चाहते हो कि सतयुग में क्या होता है.....तो जानो...

सतवस्तु जिन्हां ने पहचान लई, सत् करे ओ वर्ताओ

सत् है ओन्हां दे घर दी रसम, सत् है रसम रिवाज जी

सजनों जो विचार आपने यहाँ से ग्रहण किये हैं, उस विचारधारा का प्रवाह कुल ब्रह्माण्ड तक पहुँचाना है और इसे अपना प्रमुख कर्त्तव्य मानना है। याद रखना कि हम सब अनेक नहीं अपितु एक हैं। अगर इस प्रकार हम एक से एक आपस में जुड़ते गये तो शीघ्र ही इस ब्रह्माण्ड में सुख और शान्ति का साम्राज्य स्थापित कर एकता के प्रतीक बन जाएँगे। इसका शुभ आरम्भ सबने सबसे पहले अपने अन्तर्घट से करना है और फिर इस प्रवाह को अपने परिवारों, शहरों व समाज में फैलाना है। इस हेतु आपके पास जितने भी तरीके हैं उनका भरपूर इस्तेमाल करना है ताकि इस कार्य को और गति मिले। आपके इस कार्य को और अधिक उत्साह मिले और आपका आत्म-विश्वास बढ़े, इसके लिए हर शहर में जागृति प्रोग्राम हो रहे हैं। आप सबने भी समय निकालना है और उस कार्यक्रम के माध्यम से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का सन्देश जन-जन तक पहुँचाना है। जानो यह सर्व सांझा काम है अतः सबने इसे करना है।

सजनों आपकी जानकारी हेतु देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी यह लहर अब चल पड़ी है। हमें लगता नहीं था कि यह कुदरत का कार्य इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ेगा। परन्तु अब लगता है कि ऐसा सोचना हमारी नादानी थी क्योंकि कुदरत तो अपना कार्य खुद ही करती है। वह अपने आप ही अपने कार्य को आगे बढ़ाती है। सो सब समझदार बनना और समझना कि कुदरत का काम कुदरत ने करना है, हम तो इस हेतु एक निमित्त कारण हैं। निमित्त कारण हैं तो इसका मतलब कि यह कार्य करने में हम सक्षम हैं। इस विचार को दृष्टिगत रखते हुए सब उत्साह से आगे बढ़ना और सबके अन्दर इस सृष्टि के समरूप सदस्य होने का भाव भरना। जानो ऐसा करने से सब लड़ाई-झगड़े समाप्त हो जाएँगे और सर्वत्र शान्ति छा जाएगी। इसी तरह ओलम्पियाड के कार्य को भी सब तक पहुँचाना है और सत्संग की हर क्रियाविधि में बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए समभाव-समदृष्टि के स्कूल का सन्देश सब तक पहुँचा देना है। आशय यह है कि घरों में, परिवारों में, सहेलियों में, संस्थानों में, शादी-विवाह या अन्य प्रोग्रमों में सबके साथ सतवस्तु की ही बात करो और उसी का सन्देश आगे पहुँचाओ और जन्म की बाजी जीत जाओ।   आप सब ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।